Rohtas Mahila College, Sasaram, 17.07.20
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology, B.A. Part I H, Pr-I
2019-20

(Topic - शिक्षण में प्रेरणा की भूमिका)

प्रगति की प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं। लेकिन यह प्रगति वास्तव में सीखने की इच्छा या उद्देश्य पर निर्भर करती है। आकस्मिक शिक्षण अर्थात ऐसा शिक्षण जिसके पीछे कोई इच्छा या उद्देश्य न हो, विश्वसनीय नहीं होता है ऐसी स्थिति में व्यक्ति सीख भी सकता है और नहीं भी। दूसरी ओर इच्छा या उद्देश्य होने पर वह व्यवस्थित ढंग से जान-बूझकर अवश्य ही सीख लेगा। इस प्रकार का सीखना साधनात्मक होता है जिसका चयन व्यक्ति जान बूझ कर किसी अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए करता है। अतः चयनात्मक शिक्षण वास्तव में अभिप्रेरित होता है। इसी कारण प्रेरणा को शिक्षण की आवश्यक शर्त मानी जाती है। गेट्स आदि (Gates etal, 1942, 1964) ने कहा है "प्रेरणा शिक्षण का एक आवश्यक कारक है"

शिक्षण में प्रेरणा के निम्नलिखित तीन कार्य हैं -

(i) संचयक कार्य :- प्रेरणा या प्रेरक व्यक्ति या प्राणी की क्रिया का संचय करता है। प्रेरणा से प्रभावित होकर वह किसी क्रिया को करने या किसी विषय को सीखने के लिए तत्क्रिय हो उठता है। शक्ति (energy) निर्मुक्त हो जाती है और क्रिया उत्तेजित हो जाती है।

(ii) चयनात्मक कार्य :- (Selection function) :- प्राणी या व्यक्ति द्वारा सीखे जाने वाले विषय अथवा निष्पादित की जाने वाली क्रिया के चयन में प्रेरक सहायक होता है। मानव शिक्षण (Human learning) हमेशा चयनात्मक होता है (आकस्मिक शिक्षण को छोड़कर) जो प्रेरक के इसी चयनात्मक कार्य का परिणाम है होता है। गेट्स आदि (Gates etal, 1964) ने इसकी चर्चा करते हुए कहा है कि "प्रतिक्रियाएँ चुन ली जाती जाती है और सीख ली जाती है, क्योंकि क्रियात्मक रूप में आवश्यकताओं तथा प्रेरकों से सम्बद्ध होता है"

(iii) दिशात्मक कार्य (Direction function) :- प्रेरणा व्यक्ति या प्राणी को एक विशेष दिशा (Direction) में सीखने या क्रिया करने हेतु बाध्य करती है। भूखा व्यक्ति कुछ ऐसी वस्तु की दिशा में क्रियाशील हो जाता है जो उसकी भूख को

Scanned with CamScanner

दृष्टि का रखे। व्यक्ति एक विशेष दिशा में तब तक सक्रिय होकर क्रिया करता रहता है या सीखता रहता है जब तक कि अपेक्षित लक्ष्य (Desired goal) प्राप्त नहीं हो जाता है। प्रेरणा जितना ही ही अधिक प्रबल होती है ~~अथवा~~ अथवा प्रोत्साहन (incentive) जितना ही अधिक मूल्यवान (valuable) होता है, सीखने की तत्परता एवं कुशलता उतनी ही अधिक होती है, यद्यपि दोनों के बीच पूर्ण अनुकूलता नहीं होता है। प्रेरणा के महत्व के ऊपर प्रकाश डालते हुए गेट्स आदि (Gates etal, 1964) ने कहा है "प्रेरकों के चयनात्मक कार्य से सम्बद्ध उनकी भूमिका व्यवहार निर्देशन में है।"

Scanned with CamScanner